IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अभिज्ञान शाकुंतलम नाटक का आलोचनात्मक विश्लेषण

MANIDIPA BHATTACHARJEE

* ABSTRACT :

Abhijnana Shakuntalam" is considered one of the most important works of Indian literature, primarily because it is a masterpiece of Sanskrit drama by Kalidasa, beautifully depicting a poignant love story between King Dushyanta and Shakuntala, showcasing themes of love, duty, and the power of nature, while also being recognized for its exquisite poetic language and rich character development, making it a landmark piece in world literature as well; it was even one of the first Indian plays to be translated into Western languages, significantly introducing Indian culture to the West.

 अमूर्त :

अभिज्ञान शाकुंतलम महाकवि कालिदास द्वारा रचित एक उत्कृष्ट नाटक है। इसे दुनिया भर के लोगों से प्रशंसा मिली है। राजा दुष्यंत और युवती शकुंतला की प्रसिद्ध प्रेम कहानी नाटक के सात अंकों में बताई गई है, जो नाटक का निर्माण करते हैं। दो प्रेमी लोगों की यह कहानी कलात्मक तरीके से कही गई है। यह लोगों द्वारा अनुभव की जाने वाली भावनाओं का एक दृश्य प्रतिनिधित्व है। इसका एक-एक शब्द वीणा द्वारा उत्पन्न संगीत है।

अभिज्ञान शाकुंतलम नाटक भारत के महानतम कवियों में से एक कालिदास द्वारा लिखा गया है। यह नाटक राजा दुष्यंत और शकुंतला के बीच प्रेम की एक सुंदर कहानी है। नाटक का शीर्षक, जो मूल रूप से संस्कृत में है, वास्तव में अंग्रेजी में इसका अर्थ है शकुंतला की पहचान। अभिज्ञान शाकुंतलम पहला भारतीय नाटक है जिसका विभिन्न पश्चिमी भाषाओं में अनुवाद किया गया है। कालिदास ने महान महाकाव्य महाभारत से शकुंतला की कहानी निकाली थी और इसे अपने नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम में और भी व्यापक रूप से चित्रित किया था।

नाटक के दो मुख्य पात्र हैं दुष्यंत और शकुंतला। हस्तिनापुर के राजा दुष्यंत एक महान और दयालु शासक हैं जिनका सभी सम्मान करते हैं। शकुंतला एक सुंदर युवती है जो ऋषि विश्वामित्र और अप्सरा मेनका की पुत्री है। शकुंतला ऋषि कण्व के आश्रम में पली-बढ़ी है, क्योंकि उसे उसके जन्मदाता माता-पिता ने त्याग दिया था।

शिकार के एक दिन बाद दुष्यंत कण्व के आश्रम जाते हैं, जहाँ उनकी पहली नज़र सुंदर शकुंतला पर पड़ती है। वह पहली बार उस पर आकर्षित हो जाता है, जब उसकी नज़र उसकी सुंदरता से मिलती है। शकुंतला की सहमति के बाद, दोनों गंधर्व विवाह करते हैं। हालाँकि, उनके विवाह के तुरंत बाद, दुष्यंत वापस लौटने और शकुंतला को अपने साथ ले जाने का वादा करके अपने राज्य के लिए निकल जाता है। प्रेम में मंत्रमुग्ध, शकुंतला पूरे समय अपने पति के बारे में सोचती रहती है, जिसका असर उसके आस-पास के माहौल पर पड़ता है। क्रोधित ऋषि दुर्वासा आश्रम जाते हैं और शकुंतला के दरवाजे पर पानी माँगते हैं। हालाँकि, वह अपने पति के विचारों में इतनी खोई हुई है कि वह ऋषि की सेवा करने में विफल रहती है। अपमानित महसूस करते हुए दुर्वासा शकुंतला को एक श्राप देते हैं, वह उन्हें बताता है कि खोई हुई स्मृति को पुनर्जीवित किया जा सकता है यदि शकुंतला उन्हें कोई आभूषण दिखाए जो उनके प्रेम की निशानी हो। यह निशानी वास्तव में एक अंगूठी है जो दुष्यंत ने शकुंतला को उपहार में दी थी।

दुष्यंत के लिए महीनों तक इंतज़ार करने के बाद, ऋषि कण्व उसे अकेले ही दरबार में जाने की सलाह देते हैं। यह पता चलता है कि तब तक शकुंतला दुष्यंत के बच्चे से गर्भवती हो चुकी होती है। हालाँकि, राज्य की ओर जाते समय, शकुंतला एक झील में अपनी अंगूठी खो देती है।

दरबार में, दुष्यंत शकुंतला को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर देता है, क्योंकि वह शाप के प्रभाव में अपने विवाह के बारे में पूरी तरह से भूल जाता है। वह उसके चरित्र के बारे में कई अपमानजनक टिप्पणियाँ भी करता है, जिससे वह क्रोधित हो जाती है। फिर उसे अप्सराओं द्वारा स्वर्ग में ले जाया जाता है, जिससे सभी आश्चर्यचकित रह जाते हैं। आखिरकार, महीनों बाद, एक मछुआरे को वह अंगूठी मिल जाती है। दुष्यंत को शकुंतला के बारे में अपनी याददाश्त वापस आ जाती है जब वह उस अंगूठी को देखता है और अपराध बोध से टूट जाता है। वह प्रेम में पागल हो जाता है और अपने द्वारा की गई विपत्ति के लिए खुद को कोसता है।

संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. सच्चिदानन्द तिवारी – शिवांक प्रकाशन- प्रथम संस्करण – 2011 ISBN-978-93-80801-68-1 □

संस्कृत साहित्य का इतिहास-चौखम्बा वाचस्पति गैरोला विद्याभवन, वाराणसी-1991 ।

संस्कृत साहित्य का इतिहास – बलदेव उपाध्याय-शारदा प्रकाशन, वाराणसी-1978।

संस्कृत साहित्य का इतिहास – प्रो. राधावल्लभत्रिपाठी – वि.वि.प्रकाशन-चौक -वाराणसी –2001।

संस्कृत साहित्य परिचय – प्रतिभा प्रकाशन- राधावल्लभ त्रिपाठी- प्रथम-संस्करण – 1998-ISBN 81-85268-88-6 □